# धर्मराज्यम्

सनातन धर्म- संस्कृति का प्रचार- प्रसार तथा धर्म अनुकूल व्यवस्थाओं का निर्धारण कर विश्व में धर्म राज्य की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य हैं ।

## धर्मराज्यम को जानो

**स्थापना एवं उद्देश्यः** धर्मराज्यम की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा युगाब्ध 5116, विक्रम संवत 2071 में की गयी हैं। सत्ता बदल जाने से व्यवस्था परिवर्तित नहीं होगी, सनातन धर्म व मानवता की दुर्दशा समाप्त नहीं होगी। इसके लिए सनातन धर्महित को सर्वोपरि मानने वाले हिन्दू युवकों को टोली हर गांव- शहर में खड़ी करनी होगी। इसीलिए धर्मराज्यम की स्थापना की गयी हैं। **'धर्मराज्यम' का अर्थ हैः अपनी इच्छा से सनातन धर्म- संस्कृति की सेवा करने वाले लोगों का समूह।** ऐसे ही सनातन का अर्थ है वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत में वर्णित धर्म- संस्कृति को अपना सर्वस्व मानने वाला व्यक्ति, चाहे उसकी पूजा पद्धति कुछ भी हो।'

**शाखाः** धर्मराज्यम का प्रमुख आधार है, शाखा। स्वयंसेवक किसी भी मैदान में प्रतिदिन सुबह- शाम, दोपहर अथवा रात्रि में एक घंटे के लिए आकर अपनी आयु व क्षमता के अनुसार सामूहिक रूप से कुछ शारीरिक व बौद्धिक कार्यक्रम करते हैं। इसे ही शाखा कहते हैं।

**स्वयंसेवकः** शाखा में आने वाले को 'स्वयंसेवक' कहा जाता है, चाहे उसकी आयु, जाति, आर्थिक या शैक्षणिक स्थिति कुछ भी हो। प्रमुखसंघचालक से लेकर किसी गांव या बस्ती की शाखा पर आने वाला कक्षा चार-पांच में पढ़ने वाला छात्र, सब पहले स्वयंसेवक हैं, बाद में कुछ और। स्वयंसेवक का अर्थ है- 'अपनी इच्छा से सनातन धर्म-राष्ट्र की सेवा में लगा रहने वाला।'

**कार्यक्रमः** एक घंटे की शाखा में सनातन धर्मी स्वयंसेवकों का आध्यात्मिक बल जगाने के लिए प्रायः 10-15 मिनट धर्म साधना होती हैं। इसके बाद 25-30 मिनट शारीरिक कार्यक्रम होते हैं। अनेक स्थानों पर एक ही शाखा में अलग-अलग आयु-वर्ग के स्वयंसेवक आते हैं, वहां उनकी अवस्था के अनुसार दो- तीन 'गण' बना दिये जाते हैं। बाल-किशोर एवं युवा स्वयंसेवक मुख्यतः खेल, नियुद्ध, दंड संचालन, सूर्य नमस्कार आदि करते हैं। शाखा के अन्तिम 15-20 मिनट में संस्कारप्रद मानसिक कार्यक्रम होते हैं। इनमें धर्म शिक्षा, धर्म व देश भक्तिपूर्ण गीत का गायन, सामायिक विषय पर चर्चा, किसी महापुरूष के वाक्य, श्लोक या सुभाषित का स्मरण एवं उनका विश्लेषण, प्रश्नोत्तर आदि प्रमुख हैं।

जहाँ पर किसी कारण स्थाई शाखा न चलाई जा रही हो, वहाँ पर **रविवार को दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक सामूहिक धर्म साधना** का कार्यक्रम चलाया जाता हैं।

**भगवाध्वज एवं प्रार्थनाः** धर्मराज्यम ने अपने गुरू- स्थान पर सनातन संस्कृति के प्रतीक परम पवित्र भगवाध्वज को रखा है तथा उसे साक्षी मान कर ही धर्मराज्यम की शाखा तथा अन्य सभी गतिविधियां संचालित की जाती हैं। भगवा ध्वज में तत्वरूप में सनातन धर्म के सभी देवी- देवता, महान व्यक्तित्व, श्रेष्ठ इतिहास, ज्ञान, विज्ञान, परंपरा, संस्कृति, शौर्य, त्याग, तपस्या आदि संपूर्ण महानता छिपी है, जो यज्ञ की ज्वाला का प्रतीक, यज्ञ के समान पवित्र व श्रेष्ठ है तथा भगवद् स्वरुप है, ऐसे प्रेरणा स्रोत भगवा ध्वज की छत्रछाया में ही संघ शाखा सम्पन्न होती हैं। कार्यक्रमों का शुभारम्भ भगवाध्वज के सम्मुख बैठकर, सर्वप्रथम ॐ उच्चारण, फिर दोनों हाथ जोड़कर भक्ति- भाव पूर्ण होकर की गयी प्रार्थना के बाद होता है। प्रार्थना के बाद शारीरिक व मानसिक कार्यक्रम होते है। बाद में शांतिपाठ व जयघोष कर शाखा विकिर कर दी जाती हैं।

**अन्य कार्यक्रमः** शाखा के अतिरिक्त समय में भी संस्कार जगाने तथा गुणसंवर्धन करने वाले अनेक कार्यक्रम होते हैं। जैसे- **सहभोजः** इसमें सब स्वयंसेवक अपने-अपने घर से भोजन लाते हैं। सबका भोजन एक स्थान पर मिला दिया जाता है। कुछ देर तक गीत-कविता, अंत्याक्षरी-प्रश्नमंच आदि मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों के बाद सब एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, किसके घर का भोजन किसने किया, यह पता ही नहीं लगता। परस्पर स्नेह तथा समरसता जाग्रत करने में यह कार्यक्रम अतुलनीय है।

**जनविहारः** इसमें सब स्वयंसेवक अपने नगर- गांव से दूर अन्य किसी नगर- गांव में जाकर धर्मप्रचार आदि करने के बाद 'सहभोज' करते हैं। कभी-कभी वहीं भोजन बनाते हैं या फिर सब आपस में शुल्क एकत्र कर कुछ खानपान सामग्री मंगा लेते हैं।

**शिविरः** प्रायः एक- तीन- पाँच दिन के शिविर बाल एवं तरूण विद्यार्थियों, व्यावसायियों, अवकाश प्राप्त स्वयंसेवकों के लिए अलग-अलग होते हैं। इनमें विभिन्न प्रकार की शारीरिक- मानसिक व आध्यात्मिक प्रतियोगिताओं द्वारा स्वयंसेवक की प्रतिभा को उभारने का प्रयास किया जाता है। शिविर में सब तरह की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति वाले स्वयंसेवक आते हैं, पर सब एक साथ भूमि पर सोते, खाते-पीते था खेलते हैं। इनमें भाग लेने के लिए गणवेश, किराया, भोजन शुल्क आदि सब अपनी जेब से भरते हैं।

**गणवेशः** शाखा में तो स्वयंसेवक अपनी स्वैच्छिक वेशभूषा में आ सकते है, पर कुछ कार्यक्रमों व केन्द्रों में गणवेश अनिवार्य होता है। इसमें **मातृशक्ति हेतु सफेद सूट सलवार व भगवा दुपट्टा/पगड़ी ।** मातृशक्ति सफेद साड़ी भी पहन सकती हैं।

**पुरूषों हेतु सफेद कुर्ता धोती/पाजामा व भगवा पगडी** होती है। पुरूष चाहे तो सफेद पेन्ट सर्ट भी पहन सकते हैं। प्रायः मातृशक्ति और पुरूषों की शाखायें भी अलग- अलग होती हैं।

**प्रशिक्षण वर्गः** समय-समय पर नये कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु वर्गों का आयोजन होता है। एक सप्ताह के वर्ग को 'प्राथमिक शिक्षा वर्ग' कहते हैं। तीन सप्ताह के वर्ग के 'धर्म शिक्षा वर्ग' कहते हैं। ये प्रायः मई-जून के अवकाश में होता है। प्रथम और द्वितीय वर्ष के धर्म शिक्षा वर्ग अपने प्रान्त में ही होते हैं, जबकि 'तृतीय वर्ष' का वर्ग पूरे देश का एक साथ मेरठ अथवा शाहजहाँपुर में होता है, इसकी अवधि एक मास की होती है।

**संगठन संरचना:** धर्मराज्यम की संगठनात्मक रचना हिन्दू परिवार जैसी है। एक शाखा के क्षेत्र को तीन-चार भागों में बांट देते हैं, जिसे 'हितचिन्तक' तथा इसके प्रमुख को 'हितनायक' कहते हैं, यह धर्मराज्यम की पहली इकाई है। शाखा के शारीरिक कार्यक्रमों को कराने के लिए 15-20 स्वयंसेवकों की कई टोलियां बनाते हैं, इन्हें 'गण' तथा इनके प्रमुख को 'गणशिक्षक' कहते हैं। शाखा लगाने वाला 'मुख्यशिक्षक' तथा उनके ऊपर 'कार्यवाह' होता है। नगर की तीन-चार शाखाओं या ग्रामीण क्षेत्र में न्यायपंचायत को कार्य देखने वाले को 'मंडल कार्यवाह' तथा इसी प्रकार 'नगर कार्यवाह' या ग्रामीण क्षेत्र में खंड, तहसील और जिला कार्यवाह होते हैं। नगर, खंड, तहसील तथा इसके ऊपर के स्तर पर 'धर्मव्यवस्था संचालक' भी होते हैं, इनकी भूमिका परिवार के मुखिया जैसी, जबकि कार्यवाह की भूमिका मुख्य कर्ताधर्ता की होती है। जिला तथा राज्यों के धर्मव्यवस्था संचालकों का मनोनयन धर्मराज्यम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के द्वारा होता है। धर्मराज्यम के अध्यक्ष की भूमिका परिवार के मुखिया की भांति 'मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता' की होती है, प्रायः अध्यक्ष प्रमुख कार्यकर्ताओं के परामर्श से जिला तथा राज्यों के धर्मव्यवस्था संचालकों का मनोनयन करते हैं। धर्मराज्यम अध्यक्ष के साथ खंड से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक शारीरिक, बौद्धिक, सेवा तथा व्यवस्था प्रमुखों की टोली होती है। जिले में एक प्रचार प्रमुख भी होता हैं ये सब परस्पर विचार-विमर्श से अपने क्षेत्र के कार्य को गति एवं स्थायित्व प्रदान करते हैं।

**प्रचारकः** धर्मकार्य के विस्तार में प्रचारकों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। अनेक युवा स्वयंसेवक अपनी शिक्षा के मध्य अवकाश निकाल कर 3-5 दिन का अथवा शिक्षा पूरी करने के बाद 1-2 महिने का समय

देते हैं। इन्हें ही 'प्रचारक' कहते हैं। इनको कोई वेतन आदि नहीं मिलता, पर योगक्षेम की न्यूनतम आवश्यकताएं संगठन पूर्ण करता है। सामान्यतः प्रचारक स्वयंसेवक-परिवारों में ही भोजन करते हैं, निर्धारित समय के बाद ये घर लौटकर सामान्य कामकाज में लग जाते हैं। अब धर्मराज्यम चाहता है कि अवकाश प्राप्त 'वानप्रस्थी' कार्यकर्ता' भी पूरा समय इस पवित्र कार्य में देकर अपना कर्तव्य निभायें।

**आर्थिक व्यवस्था :** धर्मराज्यम के कार्य संचालन में होने वाले सम्पूर्ण व्यय का मुख्य आधार 'धर्मदक्षिणा' है। वर्ष में एक बार सब स्वयंसेवक अपनी शाखा के अनुसार एकत्र होकर कुछ राशि भगवद्ध्वज के सम्मुख अर्पण करते हैं। यह राशि एक लिफाफे में रखकर अर्पण की जाती है, जिससे किसी के मन में हीनता या बड़प्पन का भाव उत्पन्न न हो। उस शाखा के तीन-चार प्रमुख कार्यकर्ता इसका हिसाब रखते हैं। कभी- कभी कोई धर्मनिष्ठ स्वयंसेवक धर्म-राष्ट्र कार्य को गति देने के लिए स्वेच्छा से आर्थिक सहयोग भी देते हैं। धर्मराज्यम के कार्यक्रम, कार्यालय की व्यवस्था, साहित्य प्रकाशन- वितरण, प्रचारकों के प्रवास... आदि इससे पूरे होते हैं।

**धर्मराज्यम और सेवाकार्यः** धर्मराज्यम के स्वयंसेवक निष्ठा पूर्वक सनातन धर्म- संस्कृति की रक्षा व सम्वर्धन तथा स्वदेशी स्वाभिमान के जागरण व राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण रखने के कार्यो में लगे हुए हैं। साथ ही स्वयंसेवकों द्वारा बाल संस्कार केन्द्र, नव चेतना केन्द्र, नव चेतना शिविर, योग शिविर, नव चेतना शिविर, लघु गुरुकुल आदि का आयोजन किया जा रहा हैं। भविष्य में धर्मराज्यम विभिन्न सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक व सामाजिक रचनात्मक कार्यो के प्रकल्प शुरू करने की योजना रखता हैं।

स्वयंसेवक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते समाजसेवा में स्वाभाविक रूप से लगे रहते हैं।

**धर्मराज्यम से हम क्यों जुड़े...?**

अपने लिए

अपने धर्म के लिए

अपने गौरवशाली इतिहास के लिए

भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए

नया इतिहास लिखने के लिए

जिसपे आने वाली पीढियां गर्व कर सके

भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए

अपनी गर्वीली शान के लिए

सर उठाकर जीने के लिए

अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए

सनातन संस्कृति के लिए

गौमाता के सम्मान के लिए

ऋषियों के ज्ञान के लिए

हुतात्माओं के बलिदान के लिए

मातृभूमि की शान के लिए

हमने एक कदम आपकी ओर बढ़ाया है

आप भी चलिए हमारे साथ जिससे वर्तमान को सुखद बनाते हुए

सुनहरे भविष्य की नींव मजबूत कर सके

संगठन में शक्ति है।

धर्मराज्यम से जुड़ कर धर्म एवं सनातन संस्कृति के कार्यो को गति प्रदान करे |

धर्म व सनातन संस्कृति के लिए जियें, खुद जुड़े दूसरे लोगो को भी जोड़ें |

## ========================।। धर्म युद्ध ।।========================

यह धर्म युद्ध भारत को जोड़ने वालों और भारत को जाति पंथ सम्प्रदाय में बाटने वालों के बीच है | हम जोड़ने वाले जाति पंथ सम्प्रदाय की हथकड़ियों को तौड़कर धर्म के झंड़े तले भारतीयों को एक करने का प्रयत्न कर रहे है | और बाटने वाले जाति पंथ सम्प्रदाय को मजबूत कर रहे है | जब जाति पंथ सम्प्रदाय में बाटने वाले बाटने में हार नहीं मान रहे है, तो हम भारतीयों को एक करने वाले एक करने में साहस क्यों हारे ?

**वो जाति पंथ सम्प्रदाय में तौड़ेगे, हम राष्ट्र धर्म संस्कृति से जोड़ेगे** ।

मानवता की स्थापना के लिए भारतीयों को जाति पंथ सम्प्रदाय से छुटकारा दिलाना आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य में जाति पंथ सम्प्रदाय है ही नहीं, यदि जाति पंथ सम्प्रदाय मनुष्य में होते तो दलित का खून दलित में, यादव का खून यादव में, जाट का खून जाट में, ब्राह्मण का खून ब्राह्मण में, बनिये का खून बनिये में, ठाकुर का खून ठाकुर इत्यादि में ही चढ़ता और अन्य जाति पंथ सम्प्रदाय में न चढ़ता । इसलिए वास्तव में जाति पंथ सम्प्रदाय का कोई अस्तित्व ही नहीं हैं | कितना आश्चर्य है कि हिन्दू- मुसलमान बन जाता है, हिन्दू- ईसाई बन जाता है , हिन्दू- बौद्ध बन जाता है लेकिन यादव- ब्राह्मण नहीं बन पाता ? ब्राह्मण- यादव नहीं बन पाता ? दलित- ठाकुर, जाट, ब्राह्मण, गुर्जर, कुर्मी, लोधी

इत्यादि नहीं बन पाता ? कैसा दुर्भाग्य है कि हम धर्म छोड़ सकते है, लेकिन जाति पंथ सम्प्रदाय नहीं ! जाति पंथ सम्प्रदाय के कारण हम एक नहीं हो पाये, इसीलिए कई सौ वर्षो तक विदेशी आक्रांताओं का सामना करना पड़ा और हमारा शोषण व हम पर अत्याचार हुए ।

इसलिए जाति पंथ सम्प्रदाय की प्रधानता भारतीयों के लिए बेहद खतरनाक है | हमने जाति पंथ सम्प्रदाय में बट कर देख लिया कि हमारा उत्थान हुआ या शोषण । अपने उत्थान के लिए अब हमारे साथ, धर्मराज्यम के साथ जाति पंथ सम्प्रदाय की गुलामी से बाहर निकलकर देखों, उद्धार उत्थान निश्चित है।

**संसार में हम सबसे श्रेष्ठ है लेकिन जाति पंथ सम्प्रदाय ने हमारा सत्यनाश किया हुआ है ।**

**भारतीयों को एक करने में हमारा साथ दो**

जो शीश मुझे दे सके, वो मेरे साथ आइये। धर्म क्रान्ति के लिए मुझे कई अर्जुन चाहिए ।।
स्वतन्त्र है हम सब, तो ऐसा अंधकार क्यों । मशाल थाम सके जो मुझे वो हाथ चाहिए ।।
शपथ है तुम्हे पवित्र भूमि के अन्न की । जो प्राण अपने दे सके, वो युवा मुझे चाहिए ।।
माँ, बहन, बेटी, स्त्री तो है ओर भी । रणचण्डी जो बन सके, वो रूप मुझे चाहिए ।।
बुलंद जिनके हौसले, इरादे हो चट्टान के । खून जिनका गर्म हो, मुझे वह लहू चाहिए ।।
धर्म क्रान्ति दशा दिशा रख देगी बदलकर । जो संघर्ष से न डिगे, ऐसे योद्धा मुझे चाहिए ।।

- अभिनव अनंत

**धर्मराज्यम द्वारा संचालित धर्म युद्ध के मुख्य लक्ष्य:-**

1. सनातन धर्म- संस्कृति का प्रचार- प्रसार तथा धर्म अनुकूल व्यवस्थाओं का निर्धारण कर विश्व में धर्म राज्य की स्थापना करना ।

2. विश्व मानवता का नैतिक व चारित्रिक उत्थान करते हुए संसार की समस्त भ्रष्ट व्यवस्थाओं, गलत नीतियों, साम्प्रदायिक असमानता व भ्रष्टाचार को मिटाकर बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा से मुक्त स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली एवं संस्कारवान वैश्विक धर्म राज्य की स्थापना करना ।

3. संसार के जन कल्याणार्थ मानवीय, नैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को निजी, व्यवसायिक तथा सार्वजनिक जीवन में बढ़ावा देना ।

इससे पंचदेव (विद्यार्थी, मजदूर, किसान, कर्मचारी, व्यापारी) की खुशहाली लौट आयेगी | भय, भूख, असमानता, भ्रष्टाचार व आतंकवाद पूरी तरह समाप्त हो जायेगा और पंच देवों में समता बढ़ेगी, क्षमता बढ़ेगी, नम्रता बढेगी | धर्म व सनातन संस्कृति की रक्षा व सम्वर्द्धन के लिए संगठन से जुड़े, धर्मराज्यम आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता है |

**||जो बोले सो अभय, सनातन धर्म की जय ||**

## || सनातन धर्म साधना ||

सनातन धर्म सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा है | सनातन धर्म के विषय में संसार के किसी भी देश में कोई मतभेद नजर नहीं आता, क्योंकि सनातन धर्म ही वैदिक विश्व राष्ट्र का धर्म रहा है | अब से लगभग **5** हजार एक सौ वर्ष पूर्ण हुये विनाशकारी विश्व महा युद्ध महाभारत में वेदज्ञ विद्वानों व वीर योद्धाओ के मारे जाने के कारण भारत का प्रभाव विश्व सत्ता पर निर्बल पड़ने लगा | तदानुपरांत विद्वानों की प्रतिष्ठा व क्षमता भी कम हो गई तो कालांतर में अनेक अवैदिक व भोगवादी मत- मतांतरों ने जन्म लिया | जिनके अमानवीय आसुरी कार्यकलापों से मानवता आज भी तेरा ही त्राहि- त्राहि कर रही है |

विश्व के किसी भी देश में धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए इतना दीर्घकालीन, त्यागमय और सफल संघर्ष नहीं हुआ है जितना भारत के साधु- संतों व वीर- वीरांगनाओं ने किया | विश्व की महान संस्कृतियाँ (रोम, यूनान, मिश्र, ज़रथुस्त आदि) उदित हुई काल के कपाल के कराल थपेड़ों को न सह सकने के कारण कुछ ही शताब्दियों में ध्वस्त हो गई, परंतु सनातन वैदिक हिंदू संस्कृति सहस्रों वर्षो के भीषण आघातों के पश्चात आज भी जीवित है | यही सनातन शाश्वत सत्य धर्म का प्रमाण है | इस सनातन राष्ट्र भारत ने अपने जीवन में अनेक उत्थान और पतन देखे हैं किंतु उसकी लहरों में फँस कर उसने अपने जीवन की गति कभी खोई नहीं |

कितने भी भयंकर आपत्तियों व शक्तिशाली दुष्टों का सामना करना पड़े, उसमें साहस, धैर्य व आत्मविश्वास के साथ उन्हें पराजित करने का आत्मबल, संपूर्ण समाज में सदैव विद्यमान रहना चाहिए | सतयुग में माँ भगवती दुर्गा के रुप में दैवी शक्ति ने महिषासुर का मर्दन किया | त्रेता में भगवान श्रीराम ने वनवासियों का सहयोग लेकर, उन्हें संगठित कर दुष्ट रावण की आसुरी शक्ति का विनाश किया | द्वापर में इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में दैवी शक्तियों ने आसुरी शक्तियों का विध्वंस किया | संघे शक्ति कलौयुगे | कलयुग में संगठन की शक्ति ही आसुरी शक्तियों का विनाश कर सकती है |

**शक्त्या विहीनाः पुरूषा हि लोके, नेतुं न राष्ट्रंप्रभवन्ति नूनम् |**
**देवा अपीमां समुपास्य शक्ति शुम्भादि-दैत्यान् समरे निजघ्नुः||**

शक्ति के बिना कोई भी पुरुष अपने राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकता | देवता भी शक्ति की आराधना करके ही शुम्भादि दैत्यों का संहार करने में सक्षम हुए | पवित्र सनातन धर्म में सभी देवी देवताओं के पास शस्त्र है, क्योंकि यह धर्म है | आपके पास कौन सा शस्त्र है- कोई नहीं, यह अधर्म है | ध्यान रखों हिन्दू तभी मरा है जब वो अपने धर्म से भटका है, शास्त्र (वेद, गीता, रामायण आदि पवित्र ग्रन्थ) तथा शस्त्र (हथियार) दोनो की साधना करों | अपना धर्म निभाओं, ध्यान रखों धर्म सदैव जीता है | बिना शास्त्र ज्ञान के तथा बिना शस्त्र संचालन के धर्म की रक्षा नहीं की जा सकती |

**धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः |**
**तस्माद्धर्मो न हन्तव्यः मानो धर्मो हतोवधीत् ||**

नष्ट हुआ धर्म ही मनुष्य का नाश करता है और रक्षा किया हुआ धर्म अपने रक्षक की रक्षा करता है । इसलिए धर्म को नष्ट नहीं करना चाहिए, ऐसा न हो कि नष्ट किया हुआ धर्म हमें नष्ट कर दे ।

संसार में आसुरी -पिशाची शक्तियाँ सक्रिय है | इन शक्तियों का विनाश करने के लिए प्रत्येक को अपने अंदर की बुद्धि, भावना एवम् शक्ति को केंद्रित करना होगा, ताकि अपने घर- परिवार, समाज और देश को सुखी, वैभवशाली, विजयी जीवन प्राप्त हो सके | धर्म साधना से ही समाज और देश का एकीकृत स्वरुप प्रकार होगा | धर्म साधना से ही अनाचार, भ्रष्टाचार व पापाचार मिट सकता है | भारत का प्रत्येक पहलू धर्म से परिपूर्ण है | सनातन हिंदू- जीवन प्रणाली ही भारत के जीवन- वैशिष्टय को बनाए रखने वाली है | किंतु दुर्भाग्य से मैकालेवादियों, साम्यवादियोंवादियों, अरबवादियों, कालनेमिवादियों ने शिक्षा- पद्धति व इतिहास को बदल कर भारतीय जन समुदाय के मस्तिष्क को अपना गुलाम बना लिया है | जिसके परिणाम स्वरुप संसार में अपने स्वत्व के अस्तित्व का निषेध करने वाला पापी यदि कोई होगा, तो वह अपने हिंदू समाज में ही मिलेगा |

जो समाज अपनी संस्कृति से कट जाता है उसका कभी भला नहीं हो सकता | हमें पुनः अपनी मूल संस्कृति व सच्चे अध्यात्म की ओर लौटना होगा, तभी सत्य सनातन वैदिक हिन्दू धर्म व संस्कृति की रक्षा होगी तथा सच्चे ईश्वर की उपासना से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि व मुक्ति की प्राप्ति होगी |

सच्चे ईश्वर की उपासना के लिए आवश्यक है कि हम जाति- वर्ण के मिथ्या बंधन तोड़कर सनातन धर्म के झंडे तले एक हो जायें | संसार में हम सब से श्रेष्ठ है लेकिन जाति- वर्ण- सम्प्रदाय ने हमारा सत्यानाश किया हुआ है | आइये हम उन सभी दरारों को भर दे जो अपनों के स्वार्थ व अज्ञानता और परायों के षड़यन्त्रों ने पैदा की है | हम भेदभाव और छूआछूत की दीवारें ढहा दे तथा संकल्प लें कि हम सब धरती माता की संताने है, हम सब एक है | हम सर्वप्रथम सनातनधर्मी हिंदू है, यही हमारा अस्मिता बोध है |

**हिन्दव: सोदरा: सर्वे**, **न हिंदू पतितो भवेत्** |
**मम दीक्षा धर्म रक्षा**, **मम मंत्र समानता** ||

सब हिंदू भारत माता की संतान होने से सहोदर है | इसलिए कोई हिंदू पतित नहीं हो सकता है | हमने "समानता" का मंत्र लेकर "धर्मरक्षा" की दीक्षा ली है |

## || सनातन धर्म के पतन के कारण और निवारण ||

ध्यान से पढ़ें, समझें, जीवन में उतारें !!!!!
क्योंकि, जो गलती को सुधार ले उसे मनुष्य कहते हैं।
सनातन हिन्दुओं के सभी प्रमुख गुणों को, मुसलमान, इसाई और बौद्धों ने अपनाया और दुनियाँ में छा गए।
और सनातन हिन्दू इन्हें त्याग कर, बर्बाद होने के कगार पर हैं।

**(1)** हम धर्म की शिक्षा देकर **7** से **11** वर्ष के बच्चों को गुरुकुल भेजते थे। अब बंद है।

मुसलमान, इसाई नियम से मदरसा, मिशन स्कूल में पहले धर्म की शिक्षा देते हैं।

– गुरुकुल समाप्त हो गये, मदरसे, मिशन स्कूल हजारों, लाखों की संख्या में खुल गए। हिन्दुओं के बच्चे भी उसी में शौक से जा रहे हैं। और धर्मनिरपेक्षों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

** प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी के लिए अनिवार्य गायत्री महामंत्र की त्रिकाल संध्या (सुबह, दोपहर, शाम तीनों समय जप ध्यान) समाप्त।

– उनकी **5** समय की नमाज और प्रतिदिन की प्रार्थना शुरू।

**(2)** सप्ताह में कम से कम एक दिन, पूजा, सत्संग, संगठन के लिए मंदिर जाना बंद।

– उनका जुमे के दिन नमाज मस्जिद में, और रविवार प्रार्थना चर्च में शुरू।

**(3)** हिन्दू साधू संत गुरु जनों ने अपना कर्तव्य निभाना बंद किया, जिससे समाज में उनकी प्रतिष्ठा का क्षय हुआ । धर्म शिक्षा हीन हिन्दू अब अपने साधू संतों का अपमान खुले आम करते हैं।

– उनके मौलवी, पादरी जी-जान लगाकर धर्म प्रचार करते है, जिससे उन्हें उनके समाज में भरपूर सम्मान मिलता है।

**(4)** कर्म को छोड़कर जाति को अपना लिया | घरेलू समारोहों में धर्म चर्चा बंद। केवल रटी रटायी सत्यनारायण कथा, अखंड पाठ या कीर्तन।

-जाति छोड़कर कर्म को अपनाया | उनके मौलाना गये मिलाद(सत्संग) और पादरी का प्रवचन नियम से होते हैं।

**(5)** हिन्दू धर्म गुरू मठ, आश्रम बनाना, गाडी से चलना पसन्द करता हैं, और केवल समृद्ध हिन्दू के घर जाता है, गरीब हिन्दू को दूर से ही फटकार देता है |

मुस्लिम धर्म गुरू मदरसे बनाता है जिसमें जिहादी शिक्षा दी जाती है, वो पैदल चलता है और बिना भेदभाव के सब मुस्लिमों को गले लगाता है | अमीर से पैसा लेता है और गरीब मुस्लिम को जिहाद के लिए पैसा देता है |

**(6)** देवता, धर्म गुरु का अपमान होने पर जुबान खींच लेना बंद।

– उनका ईश निंदा कानून । धर्म विरुद्ध एक भी बात बर्दाश्त नहीं।

**(7)** धर्म और साम्राज्य विस्तार के लिए, अश्वमेध यज्ञ से, पूरी पृथ्वी पर साम्राज्य विस्तार का लक्ष्य समाप्त। हमने राजनीति छोड़ दी।

– उन्होंने धर्म और राजनीति को जोडकर, दारुल इस्लाम, और पूरे संसार को इसाई बनाने का काम युद्ध स्तर पर शुरू कर दिया।

**(8)** भारतीय संविधान में हिन्दू विरोधी प्रावधान बनाकर कालनेमि वादी सरकारों की हिन्दू विरोधी, षड्यंत्रकारी नीतियों से, विद्यालयों में हिन्दू विरोधी पाठ्यक्रम से शिक्षा से हिन्दुओं को धर्मनिरपेक्ष बना दिया।

– उन्हें भेदभाव मूलक भारतीय संविधान में अल्प संख्यक बनाकर भरपूर सरकारी अनुदान देकर उनकी धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देकर और कट्टर बना दिया।

**(9)** इसीलिए संसार में हिन्दुओं का एक भी देश नहीं।

– मुसलमानों के **56** देश **,** और ईसाईयों के संसार में **150** से अधिक देश हैं।

परिणामः-

हिन्दुओं के देश में हिन्दुओं को संवैधानिक रूप से द्वित्यश्रेणी का नागरिक बनाकर रखा जाता हैं, हिन्दुओं को समानता का अधिकार भी नहीं दिया जाता, हिन्दू समाज द्वारा हिन्दू हित के लिए प्रचण्ड बहुमत से जिताये गये भारत के राजनेता कुर्सी पर बैठते ही धर्मनिरपेक्ष बन जाते है। और साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दू विरोधी बौद्ध, मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरण की नीतियाँ बनाते है । जबकि वो हिन्दू वोटों से जीतकर आते है **।**

जड़ें सूख गयी हैं- सनातन धर्म के मजबूत आधार ये हैं
गायत्री, यज्ञ, गीता, गंगा, गौमाता और कर्म ।
इन्हें अपनाने से भाग्य की उन्नति होती है। दुर्भाग्य का शमन होता है।
आज **99%** हिन्दू ये नहीं करते। इसीलिए पतन के गर्त में पहुँच गए हैं।
अतः आज से ही सनातन धर्म के इन सिद्धांतों का पालन करना शुरू कर दें।

क्योंकि:—

धर्म आचरण करने पर ही, ईश्वर रक्षा करता है।
धन जन से भरपूर बनाता, और विपत्ति हरता है।
आओ मिलकर करें साधना, देव शक्ति के जागरण की।
गूंजे फिर जयकार धरा पर, सत्य सनातन धर्म की।

|| **जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय** ||

## आत्म परिष्कार, उज्जवल भविष्य, समृद्ध व सुरक्षित जीवन हेतु धर्म साधना

<> साधना त्रिकाल (सुबह, दोपहर, सायं) की जाये।
<> सुबह सोकर उठते ही बिस्तर पर बैठे- बैठे आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें, आप चाहे किसी भी स्थिति में हो, ईश्वर सर्वसाक्षी है, उससे कुछ छिपता नहीं है।
<> दोपहर की साधना में ठीक बारह बजे बारह बार गायत्री मन्त्र का जप किया जाये।

<> घर, स्कूल, दुकान, कार्यालय, कम्पनी व मन्दिर आदि सार्वजनिक स्थानों पर भी दोपहर की साधना में ठीक बारह बजे बारह बार गायत्री मन्त्र का जप अवश्य किया जायें|

<> जिस प्रकार पिशाच व म्लेक्ष समुदाय सामूहिक उपासना करते है, उसी प्रकार संसार में सर्वश्रेष्ठ सनातन हिन्दू धर्मावलम्बियों को भी भारतवर्ष के सभी महानगरों, नगरों, ग्रामों, मोहल्लों के मंदिरों में सर्वशक्तिमान परमात्मा की सामूहिक धर्मसाधना करनी चाहिए, जिसमें संतों की प्रधान भूमिका रहें और जिन ग्राम/मोहल्ला/कॉलोनी में मंदिर नहीं है, वहाँ ग्राम देवता का स्थान हो, पीपल- वट आदि किसी पवित्र वृक्ष की छाया हो, अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर यह साधना की जाए|

<> सामूहिक धर्मसाधना **प्रत्येक रविवार दोपहर 12:00 बजे से 12:30 तक** अवश्य की जायें|

<> प्रत्येक सनातन धर्मी हिंदू का सामूहिक धर्म साधना में सम्मिलित होना अनिवार्य है|

<> 5 वर्ष तक के बच्चे और हिंदू महिलाएँ जो किसी कारणवश सामूहिक साधना कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके, वे घर पर ही रविवार को ठीक 12 बजे निर्धारित विधि द्वारा साधना अवश्य करें|

## || एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति ||

उस एक परमात्मा को ही विद्वान जन बहुत नामों से जानते है, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य, हनुमान, काली, अम्बा, गणेश, राम, कृष्ण, ओ३म आदि उसी एक परमात्मा के नाम है | परमात्मा साकार भी है, निराकार भी है, और इन दोनों से परे भी है | यदि आप साकार के उपासक है तो परमात्मा के किसी भी दिव्य रुप को अपना इष्ट बना लो और उनके आदर्शो पर चलों क्योंकि पूजा चित्र की नहीं चरित्र की होती है | दैनिक साधना में अपनी आस्था के अनुसार इष्ट मंत्र, नाम- जप के साथ प्रार्थना- साधना की जायें | लेकिन रविवार की सामूहिक धर्म साधना निर्धारित विधि के अनुसार की जायें |

हमारा इष्ट कोई भी हो, मंदिर में स्थापित प्रतिमा किसी भी देवी- देवता की हो, तो भी हम सब हिंदुओं का महामंत्र गायत्री ही है | गायत्री महामंत्र समूह चेतना के जागरण का मंत्र है, जिस में समूह (हमारे) द्वारा परमात्मा को अन्तःकरण में धारण करने की और समूह की (हमारी) बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की प्रार्थना की गई है | गायत्री छंद में उद्धृत होने के कारण इसे गायत्री मंत्र कहते है, इसका सवित देवता आकाश में स्थित भौतिक पिण्ड सूर्य के लिए नहीं, वरन् विराट परमात्मा के लिए आया है | आत्म परिष्कार, उज्जवल भविष्य, कामना पूर्ति व सुरक्षित जीवन के लिए तथा समाज में उपस्थित हजारों रावणों- कालनेमियों के विध्वंस के लिए जिस वातावरण और ऊर्जा की आवश्यकता है, सामूहिक धर्म साधना से ही उसका निर्माण होगा |

## गायत्री मंत्र कब कितना जपना आवश्यक है :

<> सुबह उठते समय आठ बार आत्मजागरण के लिए !!

<> भोजन के समय एक बार भोजन में अमृत का भाव प्राप्त करने के लिए !!

<> बाहर जाते समय तीन बार समृद्धि, सफलता और सिद्धि के लिए !!

<> मन्दिर में **12** बार प्रभु के गुणों को याद करने व संगठन बल के लिए !!

<> घर पर चौबीस बार अथवा एक सौ आठ बार सुख, शान्ति, सौभाग्य, आरोग्य वैभव व मोक्ष प्राप्ति के लिए !!

<> छींक आए तब गायत्री मंत्र उच्चारण एक बार अमंगल दूर करने के लिए !!

<> सोते समय सात बार सभी प्रकार के विकार दूर करने के लिए !!

## || साधना निर्देश ||

<> सामूहिक धर्म साधना के स्थान को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाना चाहियें ।

<> बैठने हेतु दरी, चटाई, आदि की व्यवस्था पहले से ही सुनिश्चित कर ली जायें ।

<> साफ-स्वच्छ होकर सभी हिंदू साधना स्थल पर दोपहर **11:55** बजे तक अवश्य पहुँच जायें ।

<> शान्त एवं पवित्र वातावरण में साधना आरंभ हो सदैव ध्यान रखना चाहियें ।

<> सामूहिक धर्म साधना मंदिर में या घर पर हो तो देशी गाय के घी का दीपक जलायें, अन्य सभी स्थानों पर केवल भगवा ध्वज लगाया जायें तथा उसे साक्षी मान कर ही सारे कार्य किए जायें । भगवा ध्वज में तत्वरूप में सनातन धर्म के सभी देवी- देवता, महान व्यक्तित्व, श्रेष्ठ इतिहास, ज्ञान, विज्ञान, परंपरा, संस्कृति, शौर्य, त्याग, तपस्या आदि संपूर्ण महानता छिपी है, जो यज्ञ की ज्वाला का प्रतीक, यज्ञ के समान पवित्र व श्रेष्ठ है तथा भगवद् स्वरुप है, ऐसे प्रेरणा स्रोत भगवा ध्वज को ही साक्षी माना अधिक श्रेष्ठ है ।

<> धर्म साधना में पवित्र संस्कृत मंत्रों व श्लोकों का ही पाठ किया जायें, संकल्प संस्कृत, हिंदी अथवा अपनी मातृभाषा में लिया जायें ।

<> प्रार्थना, स्तुति दोनों हाथ जोड़कर भक्ति-भाव पूर्ण होकर की जायें ।

<> प्रारम्भ में सिखाने के लिए प्रत्येक क्रिया विधि को अग्रसर समझायें, तत्पश्चात सभी समवेत स्वर में बोले, इस प्रकार साधना करना अच्छा रहेगा ।

## || ओ३म् ध्वनि ||

सभी साधक बैठ जाये तथा **ओ३म्** का तीन बार दीर्घ उच्चारण करें ।

## || ईश्वर स्तुति :||

**ॐ नमः सच्चिदानंदरूपाय नमोऽस्तु परमात्मने |**
**ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमांगल्यमूर्तये ||**

ॐ, सत्य, चित् और आनंद स्वरूप उस परमात्मा को जो परम ज्योतिर्मय स्वरुप है, साथ ही जगत के लिए मंगलकारी मूर्ति स्वरूप है, हम नमस्कार करते हैं |

**यं वैदिका मंत्रदृशः पुराणाः इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः |**
**वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकम् यं ब्रह्म शब्देन विनिर्दिशन्ति ||**

प्राचीन काल के मंत्र दृष्टा ऋषियों ने जिसे इन्द्र, यम, मातरिश्वान् कहकर पुकारा और जिस एक अनिर्वचनीय को वेदांती ब्रह्म शब्द से निर्देश करते हैं |

**गणेशेति केचित् कतिचित् दुर्गा मातेतिभक्त्या |**
**शैवायमीशं शिव इत्यवोचन् यं वैष्णवा विष्णुरीति स्तुवन्ति |**

जिस जगत के स्वामी को कोई गणेश तो कोई दुर्गा माता कहकर भक्ति करते है | शैव जिसको शिव और वैष्णव जिसको विष्णु कहकर स्तुति करते है |

**एको देव सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा :सर्वभूतेषु गूढ :|**
**कर्माध्यक्ष साक्षी चेता केवलो :सर्वभूताधिवास :निर्गुणश्च ||**

एक ही देव सभी पदार्थों में विराजमान है, वह सर्वव्यापी है और वह अन्तर्यामी है । वही कर्मों का अध्यक्ष है वही सब में वास करता है और सबका साक्षी है वही सबकी चेतना है और वह निर्गुण है ।

**सपरमात्मा साकार : अस्ति निराकार अस्ति च एतस्मात् पर अपि अस्ति :|**
**यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारम् स एक एव प्रभुरद्वितीयः ||**

वह परमात्मा साकार है, निराकार है और इन दोनों से परे भी है | वह प्रभु एक ही है और अद्वितीय है, उस परमात्मा की हम प्रार्थना स्तुति करते है -|

|| **गायत्री मन्त्र** || (बारह बार सस्वर जप करें)

**ॐ भूर्भुव तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि :स्व :धियो यो न प्रचोदयात् :|**

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू ।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू ॥
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान ॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया ।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥

## || नमस्कार ||

**ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।**
**सहस्रनामे पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥**

नमन तुम्हें प्रभुअनन्तरूपी !, अनन्त बाहु शिरनेत्रधारी। अनन्त हैं नाम तुम एक शाश्वत -, अनन्त ब्रह्माण्ड के तुम प्रभारी।ॐ सत चित् आनन्द स्वरूप परमात्मा को हम नमन करते है।

## || *प्रतिज्ञा* ||

**ईश्वर की प्रार्थना करते हुए हम यह प्रतिज्ञा लेते हैं**

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। हम उस परमेश्वर को कभी नहीं भुलेंगे।

2. वेद, उपनिषद् व गीता सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। इनका पढना – पढाना, सुनना – सुनाना और आचरण में लाना हम सनातन धर्मियों का परम धर्म है।

3. जीवमात्र के कल्याण भाव से सत्य पर आधारित ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना धर्म है। जोकि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये यही एक धर्म मानने योग्य है; वह सदा से चला आया है, उसको सनातन धर्म कहते हैं।

4. ईश्वर की आज्ञा को छोड्कर और पक्षपात सहित अन्यायी होके मत, पंथ, सम्प्रदायों में उलझकर बिना परीक्षा करके अपना ही हित करने वाले अधर्मी है। उनमें अविद्या , हठ , अभिमान, चरित्रहीनता, क्रूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेद विद्या से विरुद्ध है, यह अधर्म सब मनुष्यों को छोड्ने के योग्य है।

5. हम उन मत, पंथ, सम्प्रदायों को नष्ट करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो मानवता के लिए हानिकारक है और उन्नति और मानवता के विकास में बाधक है क्योंकि यह असमानता पर आधारित है, और हम दृढ़ता के साथ यह विश्वास करते हैं कि सनातन धर्म ही सच्चा धर्म है।

6. हम पीर, फ़कीर, साईं, कसाई, बुद्ध में कोई आस्था नहीं रखेंगे और न ही उनकी पूजा करेंगे. हम यह भी नहीं मानते और न कभी मानेंगे कि सभी धर्म एक समान होते हैं तथा अल्लाह – ईश्वर एक हैं, हम इसे पागलपन और झूठा प्रचार-प्रसार मानते हैं।

7. हमें सनातन धर्म संस्कृति पर गर्व है। हम सदा इसके सुयोग्य प्रहरी बनने का प्रयत्न करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान करेंगे और प्रत्येक के साथ विनीत रहेंगे। हम अपने धर्म और धर्मावलम्बियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करते हैं। इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

8. हम मनुष्य की समानता में विश्वास करते हैं। जन्म व कर्म के आधार पर किसी सनातन धर्मी के साथ भेदभाव नहीं करेंगे। हम शिक्षित बनेंगे, संगठित रहेंगे तथा सब काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके ही करेंगे।

9. हम अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर, सब सनातन धर्मी हिन्दुओं की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझेंगे।

10. हम से बड़ा हमारा परिवार, परिवार से बड़ा गाँव, गाँव से बड़ा नगर, नगर से बड़ा राज्य, राज्य से बड़ा राष्ट्र, राष्ट्र से बड़ा हमारा धर्म है। धर्म से बड़ा कुछ नहीं, धर्म से किसी की तुलना नहीं हो सकती। हम धर्म को सर्वप्रथम व सर्वोपरि मानेगे।

ईश्वर के नाम से यह प्रतिज्ञा करने के पश्चात, यदि उसका पालन न किया जाए तो वह ईश्वर को धोखा देने के समान हैं। हमें ज्ञात हैं कि ऐसा करने पर आगे इसके लिए हमें दण्ड मिलेगा। इसलिए हम अपने आपको ईश्वर के दण्ड से मुक्त रखेंगे. हम इस प्रतिज्ञा के अनुसार ही चलेंगे।

**स्मरणीय ; अपने घर पर अग्नि, जल या देव प्रतिमा के सामने यह प्रतिज्ञा लेने से आपका भी भला होगा।**

**|| शुभकामनाएँ ||**

**ओ३म् सं समिधवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ |**
**इड़स्पदे समिधुवसे स नो वसुन्या भर ||**

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ॥
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन वृष्टि को ॥

**ओ३म सगंच्छध्वं सं वदध्वम् सं वो मनांसि जानतामं ।**
**देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानां उपासते ॥**

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ॥

**समानो मन्त्र:समिति समानी समानं मन: सह चित्त्मेषाम् ।**
**समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि ॥**

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ॥

**ओ३म समानी व आकूति: समाना हृदयानी व: ।**
**समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ॥**

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढे सुख सम्पदा ॥

**ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।**

हे परमात्मा ! आप तेजरूप, हमें तेज (आत्मिक शक्ति) से संपन्न बनाइए ।

**ॐ वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।**

हे परमात्मा ! आप वीर्यवान हैं, हमें पराक्रमी - साहसी बनाइए ।

**ॐ बलमसि बलं मयि धेहि ।**

हे परमात्मा ! आप बलवान हैं, हमें बलशाली बनाइए ।

**ॐ ओजोऽस्योजो मयि धेहि ।**

हे परमात्मा ! आप ओजवान हैं, हमें ओजस्वी (शारीरिक बल और आभायुक्त) बनाइए ।

**ॐ मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।**

हे परमात्मा ! आप मन्यु रूप (अनीति अत्याचार के प्रति क्रोध करने वाले) हैं,
हमें भी अनीति का प्रतिरोध करने की क्षमता दीजिए |

**ॐ सहोसि सहो मयि धेहि ||**

हे परमात्मा ! आप कठिनाईयों को सहन करने वाले हैं | हमें भी कठिनाइयों में अडिग रहने की, उन पर विजय पाने की शक्ति दीजिए |

सभी एक साथ मिलकर शान्त भाव से सस्वर शांतिपाठ करें

## || शान्तिपाठ ||

**ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः |**
**वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः, सर्व शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः,**
**सा मा शान्तिरेधि | ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ||**

द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी सभी शान्ति एवं कल्याण देने वाले हों |
सभी जल, औषधियाँ और वनस्पतियाँ हमें सुख- शान्ति प्रदान करें |
सभी देवता, परब्रह्म परमेश्वर और सभी सम्मिलित रूप में शान्ति देने वाले हों |
आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की शान्ति हो |
वह शान्ति हममें सदैव वृद्धि को प्राप्त हो |

शान्तिपाठ के बाद सभी अपने- अपने स्थान पर खड़े हो जाये तथा ढोल-नगाडे बजाये अथवा शंखनाद या घण्टानाद करें, इसके बाद उच्चस्वर में जयघोष बोलकर साधना सम्पन्न की जायें |

## || जयघोष ||

1. **जो बोले सो अभय- सनातन धर्म की जय |**
2. **सनातन धर्म के देवी देवताओं की - जय |**
3. **यज्ञ भगवान की - जय |**
4. **अपने अपने माता पिता की - जय |**
5. **सनातन संस्कृति की - जय |**
6. **पवित्र वेद धर्म शास्त्रों की - जय |**
7. **धर्मरक्षक अस्त्रों -शस्त्रों की - जय |**
8. **धर्म बचेगा – हम बचेगे |**

9. धर्म की रक्षा कौन करेगा- हम करेगे, हम करेगे |

10. शिक्षित बनेगे- संगठित रहेगे |

11. हिन्दू हिन्दू – एक समान |

12. नर और नारी- एक समान |

13. जाति वंश सब- एक समान |

14. धर्म की – जय हो |

15. अधर्म का – नाश हो |

16. प्राणियों में- सद्भावना हो |

17. सनातन धर्म का- कल्याण हो |

18. हर हर - महादेव |

कहो गर्व से हम हिन्दू है | माँ सीता-शबरी की संतान है |
रविदास-शंकराचार्य जी संत हमारे | वाल्मीकि-व्यास जी का ज्ञान है |
कहो गर्व से हम हिन्दू है | चाणक्य-समर्थ रामदास जी गुरु हमारे है |
श्रीराम-कृष्ण का रक्त है हममें | गोकुल-शिवाजी हमारे गौरव है |
महाराणा-भामाशाह के कुल में जन्में | केवट-विक्रमादित्य की सन्तान है |
मानव जाति हमारी, पवित्र सनातन धर्म हमारा है | कहो गर्व से हम हिन्दू है |
नहीं रूकना, नहीं थकना, लक्ष्य प्राप्ति हेतु सतत कर्म करना, यही तो मन्त्र है अपना |
मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मन्त्र समानता | कहो गर्व से हम हिन्दू है ||

# धर्मराज्यम्

सनातन धर्म- संस्कृति का प्रचार- प्रसार तथा धर्म अनुकूल व्यवस्थाओं का निर्धारण कर विश्व में धर्म राज्य की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य हैं ।

## स्वयंसेवक का संकल्प पत्र

सर्व सक्तिमान श्री परमेश्वर तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ/करती हूँ कि अपने पवित्र सनातन धर्म ,सनातन संस्कृति तथा सनातन हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने के लिये मैं "**धर्मराज्यम**" का घटक बना हूँ/बनी हूँ, संगठन कार्य मैं प्रामाणिकता से निःस्वार्थ बुद्धि से तथा तन -मन -धन पूर्वक करूंगा/करूंगी और इस व्रत का मैं आजन्म पालन करूंगा/करूंगी। **जो बोले सो अभय, सनातन धर्म की जय।**

नाम.......................................................................जन्म तिथि/ आपकी आयु.......................................

पिता का नाम.......................................................................................................................

पता.......................................................................................................................................

तहसील.............................जिला...............................प्रदेश...................................पिन कोड....................

आपकी आधार संख्या अथवा मतदाता परिचय पत्र संख्या.............................................................

फोन नं...........................................................ई.मेल.......................................................................

क्या आप फेसबुक/ट्विटर/ब्लॉगर/इंस्टाग्राम/हाइक या व्हाट्सएप्प जैसी सामाजिक साइटों का उपयोग करते हैं..................

यदि हाँ तो अपना सोशल मीडिया पता यहाँ लिखें.......................................................................................

...........................................................................................................................................

धर्मराज्यम की सदस्यता व सभी दायित्व निःशुल्क हैं, फिर भी यदि आप कोई अनुदान देना चाहते है तो उसका विवरण दें (अनुदान न देने की स्थिति में कॉलम रिक्त छोड़ दें).....................................................................................

**धर्मराज्यम के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आप किस प्रकार की सेवा देगे, कृपया हमें बतायें:-**

1. प्रचार प्रसार, साहित्य प्रकाशन व वितरण।
2. सामूहिक धर्म साधना कार्यकर्म/लघु गुरुकुल/धर्म शिक्षा केंद्र का आयोजन व संचालन।
3. बाल संस्कार केन्द्र, नव चेतना केन्द्र/शिविर, योग शिविर, राष्ट्र जागरण शिविर का आयोजन व संचालन।
4. कार्यक्रम व गोष्ठियों का आयोजन।
5. स्कूल व कॉलेज में व्याख्यान देना।
6. स्कूल व कॉलेज में भारतीय संस्कृति को जानों तथा विभिन्न खेल प्रतियोगताओं का आयोजन।
7. धर्मदीक्षा लेकर प्रचारक बनना।

दिनांक.............................. स्वयंसेवक के हस्ताक्षर

**||जो बोले सो अभय, सनातन धर्म की जय ||**

http://www.dharamrajyam.blogspot.com http://www.facebook.com/dharamrajyam
E-mail:- dharamrajyam@gmail.com Mobile:- 8535004500, 09412458954